अध्याय 2

पत्रकारिता में मानवीय मूल्यों का अवलोकन

अध्याय - 2

पत्रकारिता में मानवीय मूल्यों का अवलोकन

पत्रकारिता समाज का आईना है। यह एक ऐसी कला है जो दूरियाँ घटाती है। यह रात के अंधेरे में प्रकाश और शीतलता प्रदान करने वाले चंद्रमा में उपस्थित गड्ढों को बखूबी दर्शाती है। कहने का अभिप्राय यह है कि यह हर बात की गहराई तक पहुँचाना चाहती है तथा सत्य को उद्घाटित करती है। चाहे विज्ञान का क्षेत्र हो, शिक्षा, साहित्य व कला, राजनीति, जनकल्याण, धर्म–दर्शन, हर तरह की गतिविधियों का ज्ञान जनसामान्य तक पहुँचाने का ठेका पत्रकारिता ने उठा रखा है।

पत्रकारिता समाज की एक प्रभावशाली संस्था है। इसके बिना समाज की गति थम सी जाती है। पत्रकारिता सामाजिक चेतना का आदर्श है वस्तुतः प्रत्येक मानव अपने समाज का अधिक विवरण प्राप्त करना चाहता है और उसी से अपनी जीवन मूल्यों से परिचित होता है। अतः इसे जानने का सबसे सुगम साधन पत्रकारिता है।

विकासशील राष्ट्रों के निर्माण तथा उनकी प्रगति में पत्रकारिता का बहुत बड़ा योगदान रहा है। अंधी परंपराओं के उन्मूलन, जाति और लिंग संबंधी मानवीय अंतर को पाटने तथा नए मूल्यों की स्थापना करने में पत्रकारिता के व्यावहारिक रुख की काफी महत्ता रही है।

1. मानवीय मूल्य का अर्थ एवं परिभाषा :

सर्वप्रथम मूल्य शब्द के अर्थ को समझना आवश्यक है। **"मूल्य "** शब्द की संरचना संस्कृत के मूल धातु में 'यत' प्रत्यय लगाने से बना है, जिसका अर्थ कीमत या मजदूरी आदि होती है। मूल्य शब्द को अँग्रेज़ी में **"वेल्यू"** शब्द का पर्यायवाची माना जाता है। वेल्यू शब्द लेटिन भाषा के **'वैलीरी'** शब्द से बना है जिसका अर्थ **"अच्छा या सुन्दर होता है।"** इसे **" शारीरिक शक्ति को आनंदित करने के अर्थ में भी ग्रहण किया है।"**

"जो कुछ भी इच्छित है वही मूल्य है।"

— डॉ. राधाकुमुद मुखर्जी

[www.goggle.com]

डॉ. राधाकुमुद मुखीर्जी के विचार से **'लक्ष्य, आदर्श, प्रतिमान की संजीवित समग्राकृति की मनोग्रंथि ही मूल्य है। उनकी धारणा में सामाजिक संरचना में सहायक सभी लक्ष्य और उद्देश्य, आदर्श और व्यवहार, मान, मर्यादा, प्रतिमान, व्यापक मानवीय अवधारणा, सुकृत कार्य, सात्विक विचार आदि मानवीय मूल्यों की पूर्व पीठिका है।'**

पत्रकारिता के क्षेत्र में मानवीय व्यवहार में मूल्य शब्द का अर्थ है सहज जीवन, शुद्ध आचरण, आत्मसंयम, इन्द्रिय निग्रह, आत्मशुद्धि के अर्थ में प्रयोग हुआ है। शील, संतोष, सत्य, प्रेम, अहिंसा, नैतिकता, लोकमंगल और लोककल्याण की भावना भी मानवीय गुणों से ही सन्निहित है जो कि

मानवीय आवश्यकता की इच्छा की संतुष्टि के लिए प्रयोग में आता है। पत्रकारिता में मूल्य शब्द का सम्बन्ध न केवल आध्यात्मिकता से है बल्कि सत्य, अहिंसा, शुद्धता, अच्छाई एवं सौन्दर्य से भी है।

तात्पर्य यह कि यथार्थवादी विचारधारा में मूल्य का सम्बन्ध सत्य, ईमान, धर्म, अहिंसा, प्रेम और मानवीय सद्कर्मों से हैं, जबकि आदर्शवादी विचारधारा में मूल्य को सता और ज्ञान की विशिष्टता अथवा दशा से लिया गया है। मानवीय मूल्य एक ऐसी आचार–संहिता या सद्गुण–समूह है, जिसे पत्रकारिता के माध्यम को अपनाकर मनुष्य अपने निश्चित लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु अपनी जीवन–पद्धति का निर्माण करता है, और अपने व्यक्तित्व का विकास करता है।

इसमें मनुष्य की धारणाएँ, विचार, विश्वास, मनोवृत्ति, आस्था आदि समेकित होते है। ये मानवीय–मूल्य (Human value) एक ओर व्यक्ति के अन्तकरण द्वारा क्रमशः निस्सृत एवं परिपोषित होते हैं। ''बहुजनहित'' या ''सर्वजनहित'' इन मानवीय–मूल्यों की अन्यतम कसौटी कही जा सकती है। इसलिए पत्रकारिता में मानवीय मूल्यों की पहचान और परख काफी विचारणीय बिन्दु है।

2. पत्रकारिता मानवीय मूल्यों की नियामिका :

पत्रकारिता मानव–मूल्यों को स्थापित करती है तथा विघटित जीवन मूल्यों की स्थिति में नए मूल्यों की स्थापना में प्रमुख भूमिका निभाती है। राष्ट्र अथवा समाज में व्याप्त असन्तोष, आक्रोश या विद्रोह का नियमन करके पत्रकारिता समाज को दिशा देती है और मूल्यहीन समाज को नव–जीवन देती है। वस्तुतः पत्रिका एक चेतना है जिसके द्वारा समाज की धड़कनों को पहचाना जाता है।

वह मानवीय गुणों को विकसित करती है। दिन प्रतिदिन की घटनाओं को पाठक तक पहुँचाकर पत्रकारिता ही मानवीय संवेदना को उभारती है। आज विश्व के किसी कोने में घटी कोई हृदय–विचारक घटना पत्रकारिता के माध्यम से ही हमारे मन में करुणा जगाती है।

''ज्ञान और विचार, शब्दों तथा चित्रों के रूप में दूसरे तक पहुँचाना पत्रकारिता है।''

– डॉ. रामचन्द्र तिवारी

(राष्ट्रीय नवजागरण और हिन्दी पत्रकारिता, विश्वनाथ सिंह, पृ.सं. ६२)

विकासशील राष्ट्रों के निर्माण तथा उनकी प्रगति में पत्रकारिता का बहुत बड़ा योगदान रहा है। अंधी परंपराओं के उन्मूलन, जाति और लिंग संबंधी मानवीय अंतर को पाटने तथा नए मूल्यों की स्थापना करने में

पत्रकारिता के व्यावहारिक रुख की काफी महत्ता रही है। समाचारपत्रों ने भारतीय जन–जीवन, अंधी परंपराओं, योगी मान्यताओं और पिछडी हुई जीवन पद्धतियों की विचार दिशा बदलकर प्रगतिशील तरीकों से सोचने को बाध्य किया। सूचना का अधिकार, नारी सशक्तिकरण, बाल वेश्याएँ, यौन शोषण, बलात्कार, एड्स आदि को जनता से अवगत कराने में पत्रकारिता की विशेष भूमिका रही है। पत्रकारिता मानवीय गुणों को विकसित करती हुई उसी की अन्तर्दृष्टि पर पड़े हुए आवरण को चीरकर ज्ञानलोक में ले जाती है।

"Journalism : The profession of conducting or writing for public Journals."

- Chambers Dictionary

[Chambers Dictionary, Volume 1, Pg. No. 334]

मानवीय मूल्यों में परस्पर प्रतिस्पर्द्धा चलती रहती है। मूल्यों के इस निरन्तर टकराव के बीच मनुष्य तथा समाज मूल्यों के एक संस्तरण को विकसित कर लेते हैं जिसके अन्तर्गत साध्य मूल्यों को साधन मूल्यों से उच्च स्तर प्रदान किया जाता है। आदिकालीन साहित्य, भक्तिकालीन साहित्य और रीतिकालीन साहित्य में उक्त मूल्यों की स्पर्द्धा द्रष्टव्य है। स्वच्छंदतावादी साहित्य जहाँ मानवीय मूल्यों का प्रतिष्ठापन है। तो वहाँ प्रगतिवादी एवं प्रयोगवादी साहित्य साधन मूल्यों को जीवन का सार घोषित करता है।

पत्रकारिता पर जनवाद एवं साम्यवाद के नाम पर वर्चस्व–स्थापन भौतिक मूल्यों के संरक्षण के लिए ही किया जाता है।अनेक मूल्य एक दूसरे के साथ संघर्ष करते रहते है। ऐसी स्थिति में व्यक्ति अपनी शिक्षा एवं अनुभव के आधार पर, संस्थाओं, सामाजिक आदर्श–नियमों द्वारा निर्देशित होकर उपयुक्त मूल्यों को चुनता है।

मूल्य के परिणामस्वरूप मूल्यों का विवेकपूर्ण प्रतिपादन होता है। यह विवेक साहित्य की पत्रकारिता से मनुष्य को प्राप्त होता है जो मानवीय मूल्यों के मूल्यांकन–पुनर्मूल्यांकन का कार्य संपादित करती है। पत्रकारिता में मानव मूल्यों को जिस प्रकार का सामाजिक धरातल प्रदान किया और मानव में आध्यात्मिक मूल्यों की प्राप्ति की प्रेरणा दी वह मनुष्य में पूर्णता प्राप्ति की महत्वपूर्ण विशेषता है।

मानवीय भावना युक्त समाज ही पत्रकारिता का आधार स्तम्भ है। मानव मूल्यों से युक्त पत्रकारिता ऐसी अमर निधि है। जिसकी सुन्दरता स्वयमेव व्यक्ति के सीमित, असुन्दर व छोटे स्वरूप को असीम, सुन्दरतम और महिमामय बनाकर उसको समाज के समक्ष प्रस्तुत करती है।

''पत्रकारिता समाज का एक अनिवार्य तत्व है, जो मानवीय संबंधों को जगाने का दायित्व निभाता है।''

(हिन्दी पत्रकारिता का वर्तमान, डॉ. रमेश जैन, पृ.सं. ३१)

मानवीय मूल्य मनुष्य के सामाजिक संबन्धों का द्योतक या प्रतिरूपक है। यह संस्कृति परम्परा और प्रशिक्षण ही है जोकि आधारभूत मूल्य व्यवस्थाओं का सृजन करते है और इन्हें सामाजिक साध्य तथा लक्ष्यों के साथ गूँथते हैं जो कि मूल्यों की परितृप्ति की प्रकृति और विधि को नियमित करते हैं। परितृप्ति की प्रकृति और विधि का परिसीमन एवं नियंत्रण साहित्य पत्रकारिता के माध्यम से करता है। संस्कृति, परम्परा और प्रशिक्षण जन्य ऊर्जा पत्रकारिता ही मानव समाज को प्रदान करती है।

3. पत्रकारिता - मानव समाज के क्रिया-कलापों का लेखा-जोखाः

पत्रकारिता मूलतः मानव–समाज के बीच जन्मी एवं मानव समाज के अंदर ही स्वीकृत रचना कर्म है। अतः स्वाभाविक रूप से इसके अन्तर्गत मानव–समाज के क्रियाकलापों का लेखा–जोखा रहता है। यानी, इसके अन्दर वे सारी घटनाएँ, ज्ञान–विज्ञान की बातें आ जाती हैं, जो समाज में घटित होती रहती है और जिनका संबंध मनुष्य–जीवन से होता है।

मानव–समाज एक जटिल ताने–बाने से निर्मित, आपदाएँ, दुर्घटनाएँ, बेईमानी, भ्रष्टाचार, उसके अच्छे–बुरे कृत्य, आचरण, विश्वास, अंधविश्वास से लेकर मनुष्य द्वारा समाज के उत्कर्ष के लिए किए गए वैज्ञानिक आविष्कार, कला एवं संस्कृति, साहित्य इत्यादि के क्षेत्र में किए गए कार्य; सब कुछ पत्रकारिता की सीमा में आ जाता है। इसलिए हम यह भी कह सकते हैं कि पत्रकारिता सामाजिक जीवन की वह सीढी है, जो मानवीय मूल्यों की पहचान कराती है।

''पत्रकारिता शीघ्रता में लिखा जाने वाला साहित्य है।''

– मैथ्यू अर्नल्ड

(पत्रकारिता प्रशिक्षण, डॉ. राजेन्द्र मिश्र, राकेश शर्मा, पृ.सं. ६)

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, इसका प्रमाण यही है कि वह अकेले रहकर अपना कार्य नहीं कर सकता। अतः जिस समाज में मनुष्य रहता है उस समाज के बारे में वह अधिक–से–अधिक जानकारी प्राप्त करना चाहता है। उसकी जिज्ञासावृत्ति उसे और अधिक उत्सुक बना देती है कि उसके समाज में कब, कहाँ, क्यों, कैसे, क्या हो रहा है? इन सबको जानने का एक मात्र साधन है पत्रकारिता।

पत्रकारिता वह माध्यम है जिसके द्वारा हम समाज में मानवीय मूल्यों की स्थापना करते हैं। मनुष्य द्वारा निर्मित समाज में जब भी घोटाले होते हैं; सबकी छवि पत्रकारिता में उभरकर सामने आती है।

3.1. पत्रकारिता और मूल्य :

पत्रकारिता मानव जीवन के भौतिक, आत्मिक और आध्यात्मिक उत्कर्ष के साथ मूल्यगत परिपक्वता का मार्ग प्रशस्त करती है। मूल्य मनुष्य को अपने जीवन, अपने पर्यावरण, अपने आप से समाज और संस्कृति से ही नहीं, अपितु मानव–अस्तित्व व अनुभव से प्राप्त होते है। मूल्य परिवार, समाज, संस्कृति, धर्म, अध्यात्म, राजनीति एवं अर्थ के साथ शिक्षा से सम्बद्ध होते हैं।

इन मूल्यों का समनेत रूप जीवन मूल्य कहलाता है। जीवन–मूल्यों का अस्तित्व पर्यावरण, सामाजिक एवं वैज्ञानिक परिवर्तन पर अवलंबित है। पत्रकारिता मानवीय मूल्यों को शाश्वता प्रदान कर शेष मूल्यों को परिवर्तित रूप में ग्राह्य, नियंत्रित एवं लोकमंगलकारी बनाती है।

सामाजिक एवं पारिवारिक मूल्य युग–सापेक्ष हो सकते हैं, आर्थिक, धार्मिक एवं राजनीतिक मूल्य की सत्ता–सापेक्ष हो सकते हैं; किन्तु मानवीय मूल्यों में शाश्वतता होती है। समता, न्याय, सहअस्तित्व, सहकर्म एवं सहयोग युग एवं सत्ता सापेक्ष मूल्यों के प्राणतत्व है; पर मानवीय मूल्यों की आत्मा संवेदनाधारिता व्यावहारिकता एवं अन्र्तसम्बन्ध की आत्मीयता है जो अमूर्त है, अनुभवगम्य है।

अनन्त शाश्वत व सार्वभौम मूल्य अपनी अनिवार्यता को उस लोकातीतत्व से प्राप्त करता है जोकि मूल्यों के संस्तरणात्मक और विकासात्मक व्यवस्था को निर्देशित एवं नियंत्रित करता है।

''राष्ट्रीय एवं मानवीय मूल्यों से संदर्भित सत्कार्य ही पत्रकारिता है, जिससे देशवासियों की नस–नस में स्वतंत्रता और मानवता की भावना संचार होती है।''

(डॉ. अर्जुन तिवारी)

(पत्रकारिता : सैद्धान्तिक स्वरूप एवं विकास, डॉ. अर्जुन तिवारी, पृ.सं. ६३)

ऐसे मूल्य अमूर्त एवं आदर्शात्मक होते हैं जिनका सार आनंद है। समाज के नियंत्रण का अनुमोदन के माध्यम से समस्त मानवीय अभिप्रेरणाएँ मूल्यों में रूपांतरित हो जाती है। समाज आधारभूत प्रेरणाओं सहित समस्त प्रेरणाओं को न केवल ढालता है, अपितु उनकी अभिव्यक्ति एवं परितृप्ति के साधनों को साहित्य एवं पत्रकारिता के माध्यम से निश्चित करता है।

पत्रकारिता समाज की दिशा-दर्शीका

4.पत्रकारिता समाज की दिशा-दर्शिका :

पत्रकारिता समाज की दिशा–दर्शक और नियामक है। यह बुराइयों को दूर करने का यत्न करती है और समाज को सही दिशा की ओर बढ़ने के लिए प्रेरित करती है। यह इस तथ्य को खोलती है कि समाज में बुराई, वैमनस्य, सांप्रदायिकता, संकीर्णता, स्वार्थपरता, विद्रोह इत्यादि क्यों हैं? साथ ही पत्रकार इन स्थितियों के मूल में सक्रिय तत्वों पर टिप्पणी करता है और यह भी संकेत करता है कि एक स्वस्थ समाज के निर्माण में स्वस्थ पत्रकारिता का महत्वपूर्ण योगदान रहता है।

स्वस्थ पत्रकारिता ही समाज को सही दिशा दे सकती है। राष्ट्र में घटने वाली सभी महत्वपूर्ण घटनाओं के बारे में ज्ञानगर्भित टिप्पणियों तथा आलोचनाओं को मानव के समक्ष रखकर उस पर प्रकाश डालती हुई उसे सही दिशा में आगे बढ़ने में सहायता करती हैं।

विकास की गति हमेशा विरोधाभासी होती है। हर स्थिति और घटना से अच्छे–बुरे का संबंध होता है। पत्रकारिता इस तथ्य का खुलसा करते हैं कि समाज में वैमनस्यता, संकीर्णता, स्वार्थपरता, विद्रोह आदि क्यों हैं। पत्रकारिता इनके मूल तथ्यों को उजागर परिणामों की विवेचना कर इनसे लड़ने का तरीका बताते हैं।

इसी कारण कहा जाता है कि एक स्वस्थ समाज के निर्माण में स्वस्थ पत्रकारिता की निर्णायक भूमिका होती है, क्योंकि पत्रकारिता की निर्णायक भूमिका होती है, क्योंकि स्वस्थ पत्रकारिता ही समाज का दिशा–दर्शक करा सकती है।

4.1. पत्रकारिता और सामाजिक परिवर्तन :

पत्रकारिता और सामाजिक दायित्व के विस्तृत पटल पर यह विचारणीय है कि पत्रकारिता द्वारा अब तक किन–किन क्षेत्रों में सामाजिक परिवर्तन हो गया है या किस किस क्षेत्र में संभव है। पत्रकारिता द्वारा समाज के तमाम अंधविश्वासों पर आधारित मान्यताओं को समाप्त किया गया। चेचक को अब शीतला माता का प्रकोप मानना लगभग समाप्त हो गया है। पत्रकारिता वर्तमान जीवन का आधार है। समाज के प्रत्येक वर्ग की आवश्यकताओं की पूर्ति, स्वस्थ समाज के निर्माण और भविष्य के प्रति आश्वस्ति को आभासित करने में पत्रकारिता ही सर्वोपरि साधन है।

मानव के अतिव्यस्त आधुनिक जीवन में अपने पारिवारिक परिवेश से जुड़ने का समय भी नहीं रह गया है। किसी विचार के प्रति दृष्टिकोण, आस्था और सामाजिक मूल्यों को बदलने के लिए व्यक्ति, परिवार और समूहों को शिक्षित करने के लिए बड़े सूझबूझ की आवश्कता होती है।

आज पत्रकारिता ही समस्त विश्व का दर्पण बनकर हमारे समक्ष सही तस्वीर प्रस्तुत करने लगी है। समस्त समाचार, समाचार–पत्रों में

उत्कीर्ण रहते हैं। पत्रकारिता ने मानवता के ज्ञान और चेतना में वृद्धि की है, मूक विचारों को वाणी दी है, और स्वप्नों में रंग भरे हैं।

यह एक साधारण व्यक्ति के सामर्थ्य से बाहर की चीज़ है कि वह विज्ञान की खोजों और दार्शनिकों के ऊँचे विचारों को आसानी से समझ सके, पर पत्रकारिता ने उसे भी संभव बना दिया है। समाज को विशेष दिशा–देना उसे सशक्त करना, उसमें प्रभाव और ओज पैदा करने का काम पत्रकारिता का है।

पत्रकारिता में जीवन के यथार्थ को अधिकधिक रूप से समाज को प्रभावित करने की जो क्षमता होती है यदि उसमें पूर्ण सच्चाई हो तो उस क्षमता को और भी बल मिलता है और अनिवार्यतः समाज उससे प्रभावित होता है। परिणामतः व्यक्ति का चिन्तन और निर्णय परिवर्तित हो जाता है।

इस प्रकार पत्रकारिता का मनुष्य की जन्मजात प्रवृत्ति से सीधा–संपर्क जुड़ता है। सामाजिक परिवर्तन जरूरी तो है, लेकिन वह परिवर्तन इस सीमा तक पहुँच जाए जहाँ देश और समाज का अपना वैशिष्ट्य, अपनी संस्कृति और अपनी अस्मिता ही समाज नष्ट कर दे।

आज की विषम परिस्थितियों में देश को अक्षम बनाए रखना, राष्ट्रीय भावना को मजबूती प्रदान करना, मानवीय मूल्यों की स्थापना करना, सामाजिक तथा आर्थिक बुराइयों का समाधान करना, धर्मनिरपेक्ष भावना को

बलवान बनाना, समाज के विभिन्न वर्गों को एक दूसरे के समीप लाकर एकजुट करना, आदि पत्रकारिता का उत्तरदायित्व है।

5. पत्रकारिता - मानवीय गुणों और मूल्यों का पोषक :

5.1. पत्रकारिता मानवीय गुणों के विकास में सहायक :

पत्रकारिता मानवीय गुणों को विकसित करती हुई उसी का अन्तदृष्टि पर पड़े हुए आवरण को चीरकर ज्ञानलोक में ले जाती है। प्रत्येक मनुष्य निर्भीकता, स्पष्टवादी और साहसी होने की आकांक्षा रखता है। कहने की आवश्यकता नहीं कि इन गुणों का विकास पत्रकारिता के माध्यम से सहज रूप में ही हो जाता है क्योंकि एक पत्रकार जो कुछ भी कहता है वह निर्भीक व डंके की चोट पर कहता है। मनुष्य समाचार–पत्रों में अपने सहज स्वभाव के कारण ही किसी समाचार को पढ़कर आन्दोलित होता है, साहस का संचार होता है और स्वतंत्र निर्णय लेने की क्षमता का विकास होता है।

इस प्रकार मानवीय मूल्यों का जीवन दर्शन है पत्रकारिता। इसका उद्देश्य मात्र समाचार का सम्प्रेषण करना ही नहीं, वरन् मनुष्यता के प्रति सच्ची तड़प पैदा करना है। यह मनुष्य की चेतना को प्रबुद्ध और जागरूक करती है, उसके अधिकार एवं कर्तव्य का बोध कराती है, इसलिए इसका दायित्व मंगलकारी है।''

"पत्रकारिता लोकतंत्र का चतुर्थ आधार स्तंभ है, क्योंकि संपूर्ण मूल्यों का संरक्षण एवं मंगलीकरण यही करती हैं।"

(हिन्दी पत्रकारिता का वर्तमान, डॉ. रमेश जैन, पृ.सं. ३२)

5.2. पत्रकारिता मानवीय मूल्यों का पोषक :

एक व्यवसायिक विधा होने के नाते पत्रकारिता का उद्देश्य मानव सभ्यता का उत्तरोत्तर विकास है। यह तभी संभव है जब मानवीय गुणों का पोषण हो, स्वतंत्रता, निर्भयता, सत्यनिष्ठा, समता, सदाचार आदि के प्रसारण से समाचार माध्यम मानवीय गुणों का पोषण करते हैं।

अधिकतर समाचार माध्यम अपने व्यावसायिक विस्तार और लोकप्रियता प्राप्त करने के लिए ऐसे आदर्श वाक्यों का चयन करते हैं जिनमें उपरोक्त मानवीय गुणों की अभिव्यक्ति होती है, ये गुण समाचार माध्यमों की जीवंतता को परिलक्षित करते हैं। यदि पत्रकारिता के माध्यम से घोषित–प्रचारित आदर्श वाक्य के अनुकूल आचरण नहीं करता तो समाज में उसे स्वीकार्यता नहीं मिलती।

इसलिए मानवीय गुणों का पोषण कम या अधिक प्रत्येक समाचार माध्यम की बाध्यता है यही बाध्यता व्यापक स्तर पर पत्रकारिता का उद्देश्य बन जाती है। पत्रकारिता मानवीय गुणों के विकास में सहयोग करती है और समाज में मानव मूल्यों का पोषण करती हैं।

निष्कर्षः

अतः स्वाभाविक है कि पत्रकारिता मनुष्य के भीतर श्रेष्ठ मानवीय गुणों का संचार करती है। मानव मूल्यों को पोसती है, प्रेरणा प्रदान करती है, मनुष्य को कर्मशील बनाने की चेष्टा करती है। एक तरह से प्रायः सभी संचार–माध्यमों का उद्देश्य असत् पर सत् की विजय दिखाना है।

पत्रकारिता मानव–समाज के बीच जन्मी और मानव–समाज के अन्दर ही स्वीकृत रचना–कर्म है। पत्रकारिता सामाजिक जीवन की वह सीढ़ी है जो समाज को सच–झूठ, शुभ–अशुभ और अच्छे–बुरे के दरवाजे तक पहुँचाती है। पत्रकारिता आज के समाज का एक ऐसा अनिवार्य तत्व है, जो मानवीय संबंधों को जगाने तथा मानवीय मूल्यों का पोषण एवं पल्लवन करने का दायित्य निभाता है।

पत्रकारिता ही एक मार्ग है जो समाज को बदलने में सम्यक मानवीय मूल्यों का समायोजन करती हैं। अर्थात् पत्रकारिता विघटित जीवन मूल्यों की स्थिति में नए मानवीय मूल्यों की स्थापना में सहायक सिद्ध होते हैं। मानवीय मूल्य, पत्रकारिता की सच्ची परिचायिका और प्रेरक हैं।